11146CH08

अध्याय
8

वैश्विक समाज में जीवन-यापन और कार्य

उद्देश्य

इस अध्याय को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी समर्थ होंगे –

- व्यक्ति, परिवार, समुदाय और वैश्विक समाज के बीच का संबंध समझने में।

पिछले अध्यायों में आपने अपने बारे में बहुत कुछ सीखा है। दूसरों को समझने के लिए अपने आप को समझना पहला कदम है। प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जीता और बढ़ता है। इसलिए व्यक्ति के विकास और व्यवहार को समझने के लिए उसके तात्कालिक संदर्भों जैसे उसके परिवार और बड़े सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को समझना अनिवार्य होता है।

जैसे-जैसे व्यक्ति बढ़ता और विकसित होता है, वह दूसरों के साथ संबंधों का विकासशील नेटवर्क बनाता/बनाती है। व्यक्ति के लिए परिवार प्रारंभिक और अति निकटतम परिवेश है। बाल्यावस्था के दौरान व्यक्ति की गतिविधियाँ, भूमिकाएँ और परस्पर आपसी संबंध सामान्यतः परिवार के अनुसार निर्मित होते हैं। जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है उसका दूसरे परिवेशों जैसे कि विद्यालय, साथियों और आस-पड़ोस के साथ परस्पर संबंध बढ़ता है।

ये सभी प्रणालियाँ अपेक्षाकृत बड़ी संस्कृति और संदर्भ में कार्य करती हैं जिनमें आस्थाएँ, मान्यताएँ, संसाधन, अवसर और बाधाएँ शामिल हैं। रोजमर्रा के जीवन के सभी पहलू जैसे कि भोजन, पोषण, वेशभूषा, संसाधन, संचार तरीके और कार्य नीतियाँ एवं परस्पर आपसी संबंध व्यक्ति के अपने समाज की प्रणालियों द्वारा और दूसरे समाज द्वारा भी प्रभावित होते हैं। यहाँ तक कि सुदूर परिवेश में भी कोई परिवर्तन, सकारात्मक विकास या द्वंद्व हो तो वह दूसरी व्यवस्थाओं तक फैलता है और व्यक्ति को भी प्रभावित करता है। यह विशेष रूप से वैश्वीकरण के वर्तमान युग में लागू होता है, जहाँ देशों के बीच सीमाएँ कम कठोर हैं और विश्व के देश तमाम तरीकों – भौगोलिक रूप से, आर्थिक रूप से, सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से – एक-दूसरे के साथ जुड़ रहे हैं। ''वैश्वीकरण'' शब्द का अर्थ है विश्व के लोगों के बीच परस्पर अधिक जुड़ाव और वस्तुओं,

© NCERT not to be republished

सेवाओं, धन और सूचना के रूप में अधिक आदान-प्रदान। यद्यपि वैश्वीकरण नया विकास नहीं है, बस नयी प्रौद्योगिकी, विशेषतया दूरसंचार के क्षेत्र में, इसके आने से गति बढ़ गई है।

प्रत्येक समाज विश्व के दूसरे समाजों में होने वाली घटनाओं और घटनाक्रमों से अधिक से अधिक प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए यू.एस.ए. के 2008 के सब-प्राइम संकट ने विश्व भर की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है और इसका कुछ प्रभाव भारत के बाज़ारों, परिवारों और व्यक्तियों की वित्तीय स्थिति पर देखा गया। बहुत से लोगों ने शेयरों और स्टॉकों में निवेशित धन गंवाया है, यहाँ तक कि उनकी नौकरियाँ भी चली गई हैं। अत: उन्हें अपने जीवन स्तर में काफ़ी बदलाव करना पड़ा। फ़ैशन का चलन इसका दूसरा उदाहरण है। हमने अपने परिधान में बढ़-चढ़कर अंतर्राष्ट्रीय फ़ैशन को अपनाया है। इसी प्रकार कपड़ों (पहनावे) की शैली ने विश्व भर के शहरी युवकों को लुभाया है, और भारत के ग्रामीण और शहरी युवक भी इससे अछूते नहीं हैं। इस प्रकार से हमारा दैनिक जीवन न केवल हमारे परिवारों, स्कूलों और आस-पड़ोस के अनुभवों से प्रभावित होता है अपितु वैश्विक स्तर पर होने वाली घटनाओं से भी प्रभावित होता है।

यहाँ यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि हम निष्क्रिय इकाइयाँ नहीं हैं कि राह में आने वाले किसी भी प्रभाव को यूँ ही आत्मसात कर लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक सक्रिय प्राणी है जो अपने विशिष्ट व्यक्तित्व और सांस्कृतिक संवेदनाओं के अनुसार बाह्य प्रभावों या आगमों को समझता है। फैशन के उदाहरण से ही लें। टी-शर्ट के साथ जींस पहनना पश्चिमी शैली है। यहाँ टी-शर्ट के स्थान पर कुरता पहनना इसी अनुकूलन को दर्शाता है। यही नहीं, बदले में प्रत्येक व्यक्ति भी उन पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्यों या व्यक्तियों को प्रभावित करता है जिनके साथ वह संपर्क में आता है। उदाहरण के लिए यह भी सामान्यत: देखा जाता है कि किशोर या छोटे बच्चे अपने माता-पिता को नए वाहन के ब्रांड या रंग के संबंध में या छुट्टी के दिनों में घूमने जाने के लिए स्थानों के बारे में बताते हैं। अत: प्रभाव दो-दिशाओं वाला या दोतरफा होता है। यहाँ तक कि अपने ही परिवार में आप पाएँगे कि न केवल आप अपने माता-पिता से प्रभावित हो रहे हैं बल्कि कुछ क्षेत्रों में वे भी आपसे प्रभावित हो रहे हैं।

क्रियाकलाप 1

अपने परिवार से दो से पाँच ऐसे उदाहरण सोचिए और लिखिए जहाँ आपने अपने माता-पिता या दूसरे सदस्यों के निर्णयों को प्रभावित किया है।

संदर्भ और व्यक्ति गतिशील हैं, ये लगातार बदलते रहते हैं। अपने जीवनकाल में व्यक्ति विकास और स्थिति की विभिन्न अवस्थाओं से गुज़रता है। साथ-ही-साथ परिवेशों में भी परिवर्तन होता है। वर्तमान समय में, परिवर्तन की गति इतनी तेज़ है कि जिसे हम पीढ़ी अंतर के रूप में जानते हैं, यह केवल दो पीढ़ियों के बीच में ही नहीं होता अर्थात् माता-पिता और बच्चों के बीच या दादा-दादी और पोता-पोती के बीच ही नहीं होता बल्कि यह बड़े और छोटे भाई-बहनों (संतानों) के बीच में भी पाया जा सकता है। तीन वर्ष पूर्व जो स्वीकृत प्रथा थी या सोचने का तरीका था, वह अब बदल सकता है। आप में से जिनके बड़े या छोटे भाई-बहन हैं ऐसे उदाहरण सोच सकते हैं जब आप और आपके भाई-बहनों के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ हो क्योंकि आप दोनों को लगा कि आप जो कह रहे थे वह उपयुक्त तरीका था। क्या आपको याद है कि आपने अपने छोटे भाई-बहनों या बच्चों से कभी यह कहा है कि– ''जब मैं आपकी उम्र का था तो...।''

© NCERT not to be republished

अतः, व्यक्ति अपने संदर्भ/परिवेश से जुड़े होते हैं और दोनों एक-दूसरे को बनाते हैं। आपने 'प्रस्तावना' अध्याय में पढ़ा था कि व्यक्तियों का अपने परिवेश से निकट संबंध होता है। यह उसकी पुनरावृत्ति है। किसी के जीवन की गुणवत्ता विभिन्न पारिस्थितिकीय परिवेशों से प्रभावित होती है जिसमें परिवार, आस-पड़ोस, समुदाय और समाज स्थानीय तथा वैश्विक दोनों शामिल होते हैं। इकाई 2 में हम अपने आप को समझने से परिवार, स्कूल, समुदाय और समाज के संदर्भों को समझने की ओर बढ़ेंगे।

मुख्य शब्द

वैश्वीकरण, द्वि-दिशात्मक तरीके, संस्कृति, अनुकूलन, संदर्भ

■ समीक्षात्मक प्रश्न

1. 'वैश्वीकरण' का वर्णन करें, अपने कुछ ऐसे दैनिक कार्यों और रुचियों का पता लगाएँ जो वैश्विक प्रवृत्तियों या घटनाओं से प्रभावित हुए।
2. उन तरीकों की चर्चा करें जिनके द्वारा आप सोचते हैं कि आपने अपने माता-पिता को प्रभावित किया है।
3. अपने परिवार के बारे में सोचें और ऐसी दो घटनाओं का पता लगाएँ जहाँ आपको लगा कि आपके माता-पिता और आपके बीच पीढ़ी का अंतर है।

© NCERT not to be republished